

Padma Bhushan



SHRI RAM VILAS PASWAN (POSTHUMOUS)

Shri Ram Vilas Paswan, a Dalit leader from Bihar, was the founder of Lok Janshakti Party (LJP) and served as Union Minister of Consumer Affairs, Food and Public Distribution under the National Democratic Alliance (NDA) Government.

2. Born on 5th July, 1946, to a Dalit family in a caste-ridden, perennially flood-ravaged village in Khagaria District of Bihar, Shri Paswan experienced poverty, hardship and discrimination early in life. Even as a little boy, he had to switch two boats every day to cross over to reach his school in the Darbhanga District. He was able to overcome the heavy odds through sheer strength of character, diligence and a razor-sharp intellect. A very good student, he earned a Bachelor degree in Law and a Master of Arts degree from Patna University. Thereafter, he qualified for the job of DSP through the Bihar Public Service Commission but resigned in order to plunge fulltime into the hurly-burly of politics.

3. A socialist to the core, Shri Paswan was a disciple of Jayaprakash Narayan, Karpoori Thakur and Ram Manohar Lohia and carried forward their legacy of fighting for the most vulnerable, dispossessed citizens of the country. In his first foray in electoral politics, Shri Paswan was elected to the Bihar State Legislative Assembly in 1969. In the landmark 1977 General Election, Shri Paswan was elected to Parliament from Hajipur with a record margin. In the 1980s he formed the Dalit Sena, a socio-cultural outfit for amplifying the voice of the Dalit community. In 2000, he founded his own party, the Lok Janshakti Party.

4. In all, Shri Paswan won as many as nine elections to the Lok Sabha and served as a Cabinet Minister in various Ministries viz. Social Justice and Empowerment, Railways, Posts, Communications, Coal, Mines and Steel, Chemicals and Fertilizers, Food and Consumer Affairs. In each of these Ministries, Shri Paswan was a path breaker as pioneer and innovator. While serving as the Minister for Communications, he kick started the telecom revolution by planning an affordable phone in every Indian's hands. As Food Minister during the prolonged trauma of the COVID 19 pandemic lockdown, he ensured that food grains reached the poorest of the poor in every nook and corner of our vast country - a truly astounding achievement.

5. Shri Paswan devoted his entire life to the poor and the disadvantaged. His lifelong mission was to fight injustice and be the voice of the dispossessed and the downtrodden. He used his political capital and power on behalf of the most vulnerable citizens, irrespective of their caste, community or regional affiliations.

6. Shri Paswan was the quintessential Minister, dignified, soft-spoken and completely devoid of administrative self-importance. People who had the privilege of working with him have vouched for his vast knowledge and affable style. Not only was he nimble in comprehending even the most technical of subjects, but more often than not, his inputs enhanced understanding. He was a wonderful teacher and guide. He was also a fine public speaker, his speeches remarkable for sheer lucidity of thought and expression.

7. Shri Paswan passed away on 8th October, 2020.



श्री राम विलास पासवान (मरणोपरांत)

श्री राम विलास पासवान बिहार के दलित नेता और लोक जनशक्ति पार्टी के संस्थापक थे। उन्होंने नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) की सरकार में केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री के रूप में कार्य किया।

2. 5 जुलाई, 1946 को बिहार के खगड़िया जिले के जातिवाद से ग्रस्त और निरंतर बाढ़ से प्रभावित गांव के एक दलित परिवार में जन्मे श्री पासवान का जीवन गरीबी, कष्ट और भेदभाव भरे माहौल में बीता। एक बालक के तौर में, उन्हें दरभंगा जिले के अपने स्कूल तक पहुंचने के लिए प्रतिदिन दो नाव बदलनी पड़ती थी। उन्होंने चरित्रबल, परिश्रम और कुशाग्र बुद्धि के द्वारा बड़ी-बड़ी बाधाओं पर विजय प्राप्त की। एक अत्यंत मेधावी विद्यार्थी के रूप में, उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक की डिग्री और कला में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने बिहार लोक सेवा आयोग के माध्यम से डीएसपी की नौकरी के लिए अर्हता प्राप्त की, लेकिन राजनीति में पूरी तरह से उतरने के लिए जल्द ही त्यागपत्र दे दिया।

3. मूल रूप से एक समाजवादी, श्री पासवान, जयप्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर और राम मनोहर लोहिया के शिष्य थे और उन्होंने देश के सबसे कमजोर, पिछड़े हुए नागरिकों के लिए संघर्ष करने की उनकी विरासत को आगे बढ़ाया। राजनीति के क्षेत्र में अपने पहले चुनाव में, श्री पासवान को 1969 में बिहार राज्य विधानसभा के लिए चुना गया था। 1977 के आम चुनाव में, श्री पासवान हाजीपुर से रिकॉर्ड अंतर के साथ संसद के लिए चुने गए थे। 1980 के दशक में, उन्होंने दलित समुदाय की आवाज बुलंद करने के लिए एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन दलित सेना का गठन किया। 2000 में, उन्होंने लोक जनशक्ति पार्टी की स्थापना की।

4. श्री पासवान ने, कुल मिलाकर, लोक सभा के नौ चुनाव जीते और सामाजिक न्याय और अधिकारिता, रेलवे, डाक, संचार, कोयला, खान और इस्पात, रसायन और उर्वरक, खाद्य और उपभोक्ता मामले जैसे विभिन्न मंत्रालयों में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया। इन सभी मंत्रालयों में श्री पासवान ने अग्रणी पथ प्रदर्शक और नवाचारी के रूप में कार्य किया। संचार मंत्री के रूप में, उन्होंने हर भारतीय के हाथ में एक किफायती फोन देने की योजना बनाकर दूरसंचार क्रांति की शुरुआत की। खाद्य मंत्री के रूप में, कोविड-19 महामारी लॉकडाउन की लम्बी कष्टप्रद अवधि के दौरान, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि हमारे विशाल देश के प्रत्येक हिस्से रहने वाले सबसे गरीब तक खाद्यान्न पहुंचे, यह वास्तव में आश्चर्यजनक उपलब्धि थी।

5. श्री पासवान ने अपना पूरा जीवन गरीब और पिछड़े हुए लोगों के प्रति समर्पित कर दिया। उनका आजीवन ध्येय अन्याय के विरुद्ध लड़ना तथा तिरस्कृत और दलितों की आवाज बनना था। उन्होंने अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा और शक्ति का प्रयोग सबसे कमजोर नागरिक चाहे उनकी कोई भी जाति, समुदाय या क्षेत्रीयता हो, के लिए किया।

6. श्री पासवान सर्वोत्कृष्ट मंत्री, गरिमापूर्ण, सौम्य और मृदुभाषी व्यक्ति थे और प्रशासनिक आडम्बर से दूर रहा रहते थे। उनके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले लोग उनके विशद ज्ञान और मिलनसार स्वभाव के कायल थे। वह न केवल बेहद तकनीकी विषयों को तुरंत समझ जाते थे बल्कि उनके सुझाव विषय को आसान बना दिया करते थे। वह एक अद्भुत सलाहकार और मार्गदर्शक थे। वह एक बेहतरीन सार्वजनिक वक्ता भी थे और उनके भाषणों में विचारों और अभिव्यक्ति की स्पष्टता उल्लेखनीय रूप से विद्यमान रहती थी।

7. श्री पासवान का 8 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया।